स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम खण्ड
(प्रथम-पत्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास)

डॉ. मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे. के. कॉलेज

प्रगतिवाद

छायावाद के पश्चात् नवीन सामाजिक चेतना से युक्त जिस साहित्यिक-धारा का जन्म हुआ उसे 'प्रगतिवाद' की संज्ञा दी गई। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार "प्रगतिवाद की आत्मा 'साम्यवाद' में थी, दृष्टि रूस के साहित्यिक इतिहास की ओर थी, प्रेरणा राजनीतिक मंतव्यों द्वारा अनुशासित थी और कल्पना प्रोलेतारियत सत्ताशाही से अनुप्राणित थी। उसकी खोज उस नए मानव की थी जो समस्त पतनशील प्रवृत्तियों के विरोध में उपर्युक्त स्थापनाओं को विकसित करके एक प्रोलेतारियत शासन सत्ता को उभरने का अवसर दे।" [प्रोलेतारियत - सर्वहारा, श्रमिक वर्ग]

लखनऊ में अप्रैल, 1936 ई. में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना और प्रथम अधिवेशन के समय से हिन्दी में प्रगतिवादी आन्दोलन की शुरुआत होती है। इस अधिवेशन के प्रथम अध्यक्ष मुंशी प्रेमचंद थे। स्थापना के बाद हिंदी-उर्दू के ही नहीं, बल्कि दूसरी भाषाओं के भी अधिकांश लेखक इसके साथ जुड़े। क्योंकि उन्हें यह लग रहा था कि देश को औपनिवेशिक दासता से मुक्त कराने के लिए उन्हें संगठित होना चाहिए जिस तरह मजदूर, किसान और विद्यार्थी संगठित हो रहे थे। प्रगतिवाद का सैद्धांतिक आधार मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है। राजनीति के क्षेत्र में जो समाजवाद या साम्यवाद है, साहित्य के क्षेत्र में वही प्रगतिवाद है। डॉ. बच्चन सिंह ने सुमित्रानन्दन पंत कृत 'युगवाणी' को खड़ी बोली का प्रथम प्रगतिवादी काव्य माना है। प्रगतिवाद के प्रमुख कवि हैं - केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, शिव-मंगल सिंह सुमन, वासुदेव सिंह 'त्रिलोचन', [redacted] रांगेय राघव आदि। प्रगतिवादी कवियों की रचनात्मक पंक्तियाँ -

केदारनाथ अग्रवाल - "मैंने उसको जब-जब देखा,
लोहा जैसे तपते देखा, गलते देखा, ढलते देखा।"

त्रिलोचन - जड़ता है जीवन की पीड़ा, निस्तरंग पाषाणी क्रीड़ा
तुमने अनजाने वह पीड़ा, ध्वनि के स्वर से दूर भगा दी।

Scanned with CamScanner